लगान या अधिशेष का सिद्धान्त

Dr. Amitendra Singh
Economics Department
Pt.DDUGovt. Girls PG College ,RJPM Lucknow
E mail-amitendra82@gmail.com.in

लगान या अधिशेष का सिद्धान्त

- **लगान या अधिशेष**
- रिकार्डो का लगान सिद्धान्त
- विस्तृत खेती के अन्तर्गत लगान
- गहन खेती के अन्तर्गत लगान
- रिकार्डो के सिद्धान्त की आलोचनाएँ
- आधुनिक लगान सिद्धान्त
- लगान के आधुनिक सिद्धान्त की आलोचनाएँ
- रिकाडों तथा लगान के आधुनिक-सिद्धान्त का तुलनात्मक अध्ययन

लगान या अधिशेष

- लगान की तीन धारणाएँ है:
- साधारण बोलचाल की लगान की अवधारणा।
- लगान की क्लासिकल अथवा रिकार्डियन अवधारणा इसके अनुसार लगान केवल भूमि के प्रयोग का भुगतान है।
- लगान की आधुनिक अवधारणा - इसके अनुसार लगान किसी भी उत्पादन-साधन को प्राप्त होने वाला वह भुगतान है जो इसके (साधन के) हस्तान्तरण उपार्जनों पर आधिक्य के रूप में उत्पन्न होता है।
- लगान के निम्न दो महत्वपूर्ण सिद्धान्त है।
- **1-रिकार्डों का लगान सिद्धान्त या लगान का प्रतिष्ठित सिद्धान्त।**
- **2-लगान का आधुनिक सिद्धान्त।**

रिकार्डो का लगान सिद्धान्त

- इस सिद्धान्त का प्रतिपादन सुविख्यात ब्रिटिश अर्थशास्त्री डेविड रिकार्डो द्वारा किया गया था। रिकार्डो ने विभेदक लगान की व्याख्या की है। रिकार्डो के अनुसार लगान "भूमि की उपज का वह भाग है जो भूमिपति को भूमि की मौलिक एवं अनश्वर शक्तियों के प्रयोग के लिए चुकाया जाता है। दूसरे शब्दों में लगान वह आधिक्य है जो अधिक उपजाऊ भूमियों को कम उपजाऊ भूमियों की तुलना में प्राप्त होता है। भूमियों की उर्वरा शक्तियों में पाये जाने वाले अन्तरों के ही कारण लगान का सृजन होता है। यदि सभी भूमियाँ सजातीय होती अर्थात् समान रूप में उपजाऊ होतीं तो रिकार्डो के अनुसार लगान का सृजन ही न होता।

यह सिद्धान्त निम्न मान्यताओं पर आधारित है:

- (1)अन्य सभी क्लासिकल सिद्धान्तों की भाँति रिकार्डो का लगान सिद्धान्त दीर्घकाल में लगान के निर्धारण की व्याख्या करता है।
- (2)प्रत्येक देश में एक लगान-रहित अथवा सीमान्त भूमि होती है। बढ़िया भूमियों के लगान इसी भूमि कि ऊपर की दशा में मापे जाते हैं।
- (3)इस सिद्धान्त के अनुसार परिमाणात्मक एवं गुणात्मक दृष्टिकोण से भी भूमि सीमित होती है।
- (4)भूमि में कुछ "मौलिक एवं अविनाशी शक्तियाँ" पायी जाती हैं जो अन्य साधनों में नहीं होती। लगान भूमि की इन्हीं शक्तियों के प्रयोग का भुगतान होता है।
- (5)लगान केवल भूमि से उत्पन्न होता है क्योंकि भूमि प्रकृति का निःशुल्क उपहार है। पूँजी जैसे मानव-कृत साधनों पर लगान उत्पन्न नहीं होता।
- (6)देश में भूमि की जुताई अवरोही क्रम में होती है। सबसे अधिक उपजाऊ एवं सबसे अच्छी स्थित भूमि पर खेती सर्वप्रथम की जाती है।
- (7)भूमि पर लगान विभेदक उर्वरता एवं विभेदक स्थिति उत्पन्न

विस्तृत खेती के अन्तर्गत लगान

- विस्तृत खेती का अर्थ होता हैं, उत्पादन की वह विधि जिसके अन्तर्गत अनाज के उत्पादन को बढ़ाने के लिए अधिक भूमि में खेती की जाती है। विस्तृत खेती के अन्तर्गत लगान के निर्धारण के लिए रिकार्डो ने एक ऐतिहासिक उदाहारण दिया है। उन्होंने एक ऐसे देश की कल्पना की है जहाँ कोई व्यक्ति निवास नहीं करता है। भूमि बेकार पड़ी है। इस निर्जन टापू में देश की भूमि को उसके उपजाऊपन के आधार पर उन्होंने चार वर्गों में विभाजित किया है- प्रथम श्रेणी, द्वितीय श्रेणी, तृतीय श्रेणी और चतुर्थ श्रेणी। भूमि के विभिन्न टुकड़ों में विभिन्नता पायी जाती है- उर्वरता के कारण विभिन्नता अर्थात भूमि के किसी टुकड़े में उत्पादकता अधिक हो सकती है तो किसी में कम, इसी तरह स्थिति के कारण विभिन्नता जैसे बाजार से संन्निकटता तथा दूरी के कारण विभिन्नता। रिकार्डो ने यह प्रतिपादित किया कि इस स्थिति में भी लगान एक भेदात्मक बचत है। उत्तम तथा खराब भूमि के उत्पादन या आय के अन्तर को ही रिकार्डो ने लगान कहा। विशिष्ट भाषा में इसे रिकार्डो ने इस प्रकार व्यक्त किया "लगान अधि-सीमान्त तथा सीमान्त भूमि के उत्पादनों का अन्तर है।"

विस्तृत खेती के अन्तर्गत लगान

श्रम एवं पूँजी की इकाइयाँ	गेहूँ का उत्पादन (क्विंटल में)	कुल लागत (रूपये में) (क्विंटल में)	बाजार मूल्य (प्रतिक्विंटल में)	लगान (क्विंटल में)	लगान (द्रव्य में)
प्रथम श्रेणी द्वितीय श्रेणी तृतीय श्रेणी चतुर्थ श्रेणी (सीमान्त इकाई लगान रहित)	20 15 10 5	2500 1500 1500 1500	300 रू0 300 रू0 300 रू0 300 रू0	(20-5) = 15 (15-5) = 10 (10-5) = 5 (5-5) = 0	15 x 300 = 450 रू0 10 x 300 = 3000 रू 05x300=1500रू0 1500-1500=

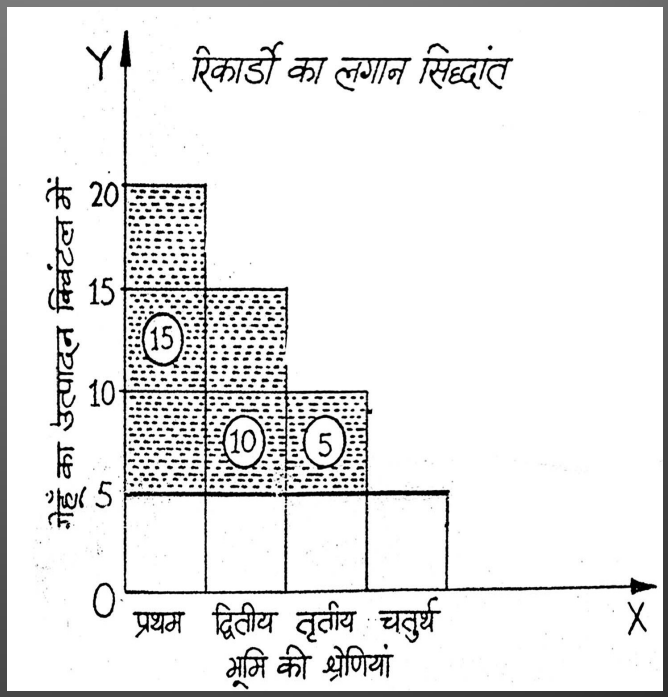

गहन खेती के अन्तर्गत लगान

- रिकार्डो ने यह प्रतिपादित किया कि यदि भूमि के विभिन्न टुकड़ों में भिन्नता नहीं हो अर्थात् टुकड़े उत्पादकता तथा स्थिति की दृष्टि से समान हो तो भी लगान उत्पन्न होगा यदि भूमि की पूर्ति दुर्लभ हो या पूर्ति सीमित हो। इस प्रकार के लगान को उन्होंने शुद्ध दुर्लभता का लगान कहा। कुछ लोग शुद्ध दुर्लभता-लगान को आर्थिक लगान कहते है। रिकार्डो के अनुसार यदि पूर्ति सीमित हो तो जब तक भूमि निष्क्रिय या अप्रयुक्त रूप में पड़ी हो तब तक लगान का प्रश्न नहीं उठेगा पर यदि भूमि की माँग इतनी बढ़ जाय कि अब प्रयुक्त भूमि नहीं रह जाए फलस्वरूप अनाज की माँग में वृद्धि के कारण बाजार में प्रचलित मूल्य औसत उत्पादन-लागत से अधिक होगी, और यह औसत आय तथा औसत लागत का अन्तर ही लगान होगा। इस प्रकार दुर्लभता का लगान औसत उत्पादन लागत (जिसमें लगान नहीं सम्मिलित हैं) के ऊपर औसत आय का वह अधिक्य है जो भूमि के [illegible] में एकरूपता होने के बावजूद भी भूमिपति [illegible] भूमि की पूर्ति की सीमितता के कारण प्राप्त [illegible] है।

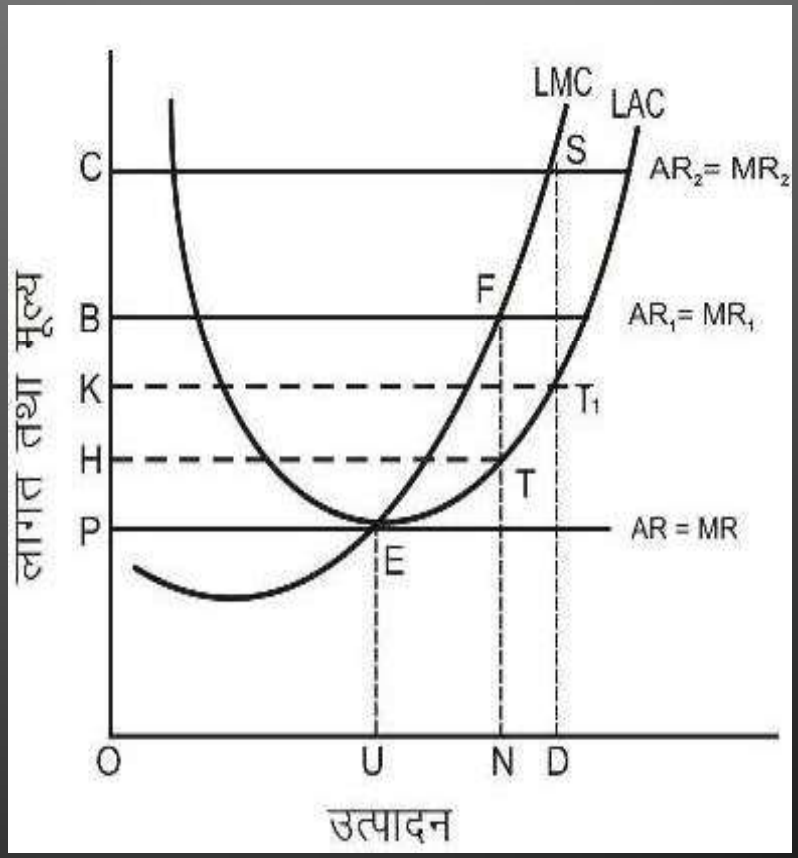

रिकार्डो के सिद्धान्त की आलोचनाएँ

- **(1) भूमि में कोई मौलिक एवं अविनाशी शक्तियाँ नहीं पाई जाती है** -आलोचकों के अनुसार भूमि में कोई मौलिक एवं अविनाशी शक्तियाँ नहीं पाई जाती हैं। आज के अणु एवं हाईड्रोजन बम के युग में भूमि के उपजाऊपन को अविनाशी कहना गलत है। साथ ही भूमि का उपजाऊपन रासायनिक खादों एवं कम्पोस्ट खाद का उपयोग करके प्राप्त की जाती है एवं बढ़ाई जाती है। अतः भूमि का उपजाऊपन मौलिक एवं अविनाशी नहीं होता है।
- **(2) भूमि को जोतने का क्रम सही नहीं** -रिकार्डो के अनुसार लोग सबसे अधिक उपजाऊ भूमि पर पहले खेती करते हैं, इसके बाद इससे कम उपजाऊ भूमि पर खेती की जाती है। किन्तु अमेरिका के अर्थशास्त्री हेनरी केरे ने इसे ऐतिहासिक दृष्टि से गलत बताया है। वास्तव में लोग उस भूमि पर पहले खेती करते हैं जो सुविधाजनक स्थिति में तथा शहर अथवा मण्डी के निकट होती है।
- **(3) भूमि की उत्पादकता को अलग से ज्ञात नहीं किया जा सकता** -आलोचकों का विचार है कि भूमि से प्राप्त उपज, भूमि की उपजाऊपन, खेती में लगाई गई पूंजी तथा श्रम, सभी का संयुक्त परिणाम होता है। ऐसी स्थिति में भूमि की उत्पादकता को अलग से प्राप्त नहीं किया जा सकता है।
- **(4) अवास्तविक मान्यताओं पर आधारित** -रिकार्डो का लगान सिद्धान्त पूर्ण प्रतियोगिता एवं दीर्घकाल की अवास्तविक मान्यताओं पर आधारित है। वास्तव में, भूमिपति एवं किसानों के बीच पूर्ण प्रतियोगिता नहीं पाई जाती है। साथ ही दीर्घकाल में हमारी कोई समस्या नहीं होती है, क्योंकि दीर्घकाल में हम सभी मर जाते हैं। यह सिद्धान्त अल्पकाल की व्याख्या नहीं करता है।
- **(5) भूमि की सीमितता ही लगान उत्पन्न होने का मूल कारण है** -रिकार्डो का विचार है कि लगान उत्पन्न होने का प्रमुख कारण भूमि के उपजाऊपन में भिन्नता होना है, किन्तु आधुनिक अर्थशास्त्रियों का विचार है कि लगान उत्पन्न होने का प्रमुख कारण भूमि की पूर्ति का इसकी माँग की तुलना में सीमित होना है। अतः अनाज के लिए भूमि की माँग बढ़ जाती है और भूमिपति को लगान प्राप्त होता है।
- **(6) कोई भूमि लगान रहित नहीं होती** -रिकार्डो के सीमान्त भूमि को लगान रहित भूमि

आधुनिक लगान सिद्धान्त

- लगान के आधुनिक सिद्धान्त की व्याख्या करने का श्रेय प्रो0 जे.एस. मिल को जाता है पुर वैज्ञानिक तथा व्यवस्थित रूप में इसको प्रतिपादित तथा विकसित करने का श्रेय श्रीमती जॉन राबिन्स को जाता है। आधुनिक अर्थशास्त्रियों के अनुसार भूमि की ही आपूर्ति सीमित नहीं है बल्कि भूमि की तरह श्रम एवं पूंजी की भी मात्रा सीमित है। रिकार्डो के अनुसार लगान एक प्रकार का अतिरेक है और आधुनिक अर्थशास्त्री भी इस बात से सहमत हैं। अन्तर इतना है कि रिकार्डो अतिरेक का कारण भूमि की उर्वरता की विभिन्नता मानते हैं, जबकि आधुनिक अर्थशास्त्री इसे विशिष्टता दुर्लभता, अथवा पूर्ति की सीमितता का परिणाम मानते हैं। विशिष्टता से अभिप्राय गतिशीलता के अभाव से है।
- आधुनिक अर्थशास्त्रियों के अनुसार लगान किसी साधन को उसके वर्तमान उपयोग में बनाए रखने के लिए अवसर लागत के ऊपर एक बचत है। **श्रीमती जॉन रॉबिन्सन** ने इसकी परिभाषा निम्न प्रकार से की है-
- **"लगान के विचार का सार वह बचत है जो कि एक साध की एक इकाई उस न्यूनतम मूल्य के ऊपर प्राप्त करती है जो कि साधन को अपना कार्य करते रहने के लिए आवश्यक है।"**
- आधुनिक लगान सिद्धान्त का आधार -लगान के आधुनिक सिद्धान्त का आधार, साधनों की विशिष्टता है। इस सम्बन्ध में **ऑस्ट्रियन अर्थशास्त्री वॉन वीजर** ने उत्पादन के साधनों को दो वर्गों में बाँटा है-
- **(1) पूर्णतया विशिष्ट साधन**
- **(2) पूर्णतया अविशिष्ट साधन**
- पूर्णतया विशिष्ट साधन वे हैं जिनका केवल एक ही प्रयोग किया जा सकता है। इन साधनों का किसी दूसरे प्रयोग में उपयोग नहीं किया जा सकता। अतः विशिष्ट साधनों की अवसर लागत शून्य होती है। इसके परिणामस्वरूप विशिष्ट साधनों के लिए दिया जाने वाला सम्पूर्ण मूल्य इसका लगान होता है। इसके विपरीत, अविशिष्ट साधन वे होते हैं जिनका कई प्रकार से उपयोग किया जा सकता है। अतः ऐसे साधनों के लिए दिए जाने वाले मूल्य के बराबर अवसर लागत अन्य प्रयोगों में भी प्राप्त हो सकता है। चूँकि इन साधनों को अपने वर्तमान मूल्य के उसके अवसर लागत के ऊपर कोई बचत प्राप्त नहीं होती है, इसलिए अविशिष्ट साधनों को कोई लगान प्राप्त नहीं होता है। इसे एक उदाहरण द्वारा समझाया जा सकता है।

लगान = (साधन की वास्तविक आय) - (स्थानान्तरण आय) या AE-TE)

गेहूँ की खेती से आय वास्तविक आय (A.E.)	चावल की खेती से आय स्थानान्तरण आय (T.E.)	आधिक्य अथवा लगान (AE – TE)
रूपया	रूपया	रूपया
1000	0 → पूर्ण विशिष्ट	1000-0=1000
	200	1000-200=800
	400 → अंशतः विशिष्ट	1000-400=600
	600	1000-600=400
	800	1000-800=200
	1000 → पूर्ण अविशिष्ट	1000-1000=0

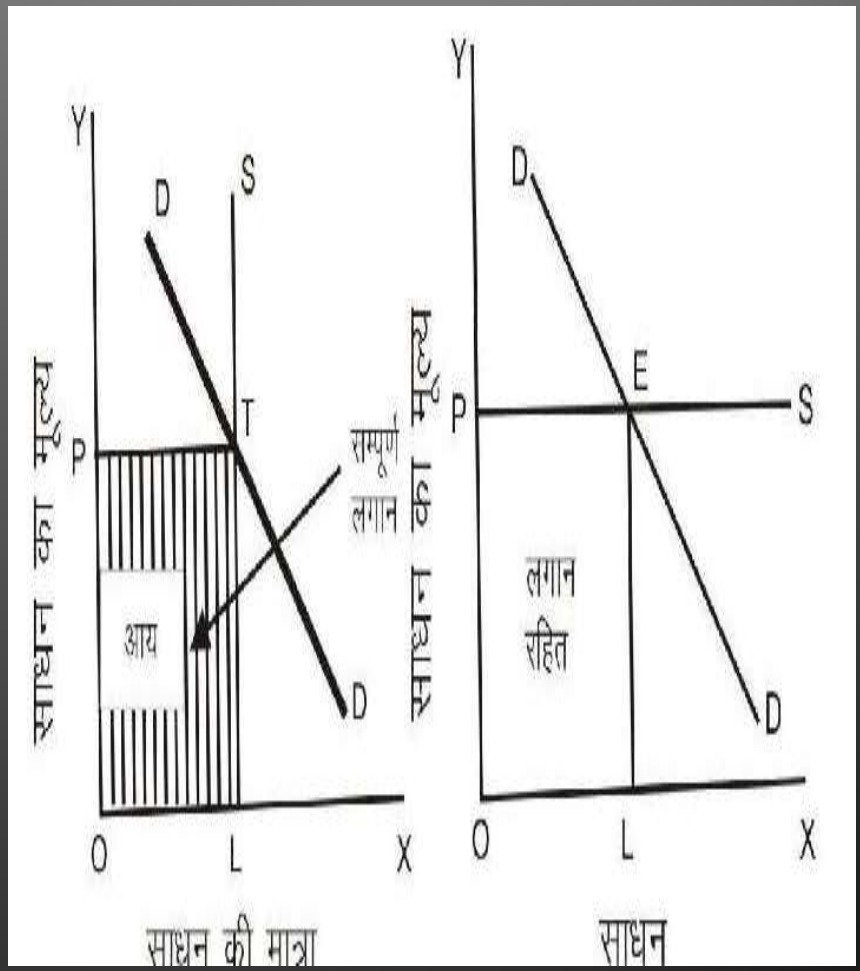

लगान के आधुनिक सिद्धान्त की आलोचनाएँ

- (1) उत्पादन का प्रत्येक साधन लगान प्राप्त कर सकता है। यह केवल भूमि से ही सम्बन्धित नहीं होता है।
- (2) लगान साधन की वर्तमान आय में उसकी अवसर लागत के ऊपर बचत है।
- (3) लगान उत्पन्न होने का कारण साधन में विशिष्टता का गुण होना है। अतः लगान विशिष्टता का पुरस्कार है।
- (4) साधन के अविशिष्ट होने अथवा साधन की पूर्ति लोचदार होने पर लगान प्राप्त नहीं होता है।
- (5) साधन के विशिष्ट होने अथवा पूर्ति बेलोचदार होने पर साधन की सम्पूर्ण वर्तमान आय उसका एक भाग ही लगान होता है। साधन जिस अंश तक विशिष्ट होता है उसी अंश तक उसके वर्तमान आय से लगान प्राप्त होता है।

रिकार्डों तथा लगान के आधुनिक-सिद्धान्त का तुलनात्मक अध्ययन

रिकार्डो का लगान-सिद्धान्त	लगान का आधुनिक सिद्धान्त
1.रिकार्डो लगान का कारण भूमि की मौलिक एवं अविनाशी शक्तियाँ मानता है।	1.आधुनिक सिद्धान्त लगान को विशिष्टता, दुर्लभता अथवा पूर्ति की सीमितता का परिणाम मानते हैं।
2. इस सिद्धान्त के अनुसार लगान केवल भूमि का ही प्रतिफल है। इस अर्थ में यह एक संकुचित सिद्धान्त है जो केवल भूमि पर लागू होता है।	2 इनके अनुसार उत्पादन के अन्य साधन भी लगान प्राप्त कर सकते हैं। इस अर्थ में यह एक विस्तृत तथा सामान्य सिद्धान्त है जो उत्पादन के सभी साधनों पर लागू होता है।
3. रिकार्डो का सिद्धान्त पूर्ण-प्रतियोगिता तथा दीर्घकाल की मान्यता पर आधारित होने के कारण काल्पनिक है।	3.आधुनिक सिद्धान्त एक व्यावहारिक सिद्धान्त है।
4. इस सिद्धान्त के अनुसार लगान सीमान्त	44. इस सिद्धान्त के अनुसार लगान = वास्तविक आय -